अंगदानकी चार लाईना

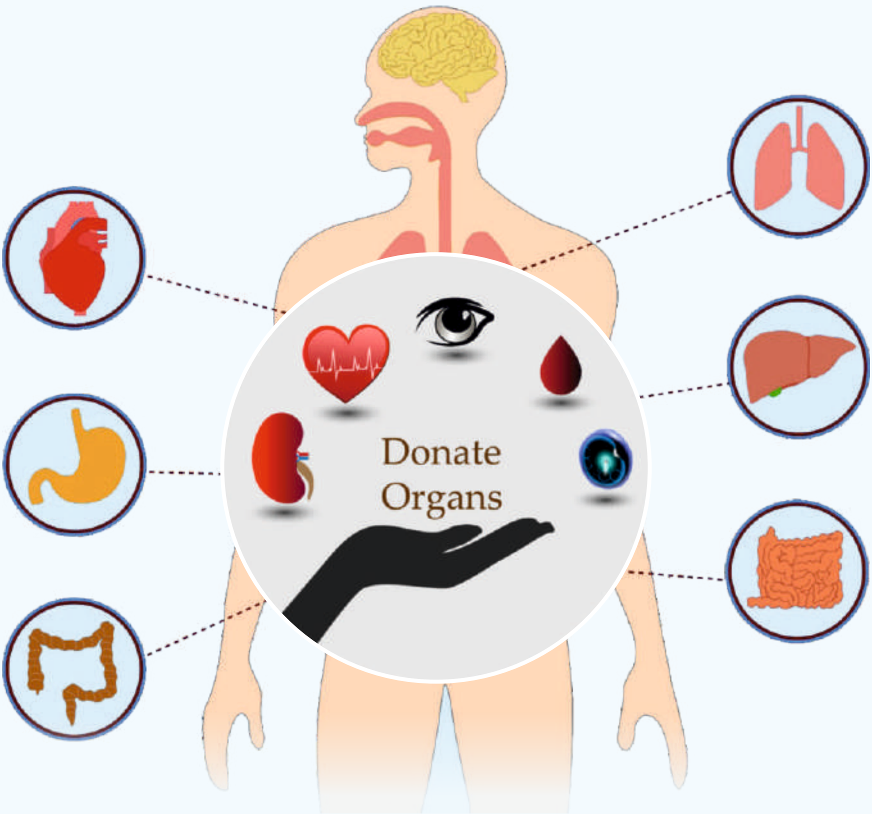

सुनील देशपांडे
9657709640
(avayavdanparivar@gmail.com)

अंगदानकी चार लाईना

(ई बुक)
प्रथमावृत्ती –
अगस्त २०२४

प्रकाशक –
फेडरेशन ऑफ ऑर्गन ॲन्ड बॉडी डोनेशन
६०१, कैलाशधाम, जी.व्ही. स्कीम रोड नंबर ४,
मुलुंड, मुंबई ४०००८१.

ई–मेल – organdonationfed@gmail.com /
federation@organdonation.net.in
वेब साईट – www.organdonation.net.in

लेखन –
श्री. सुनील देशपांडे,
मोबा.: ९६५७७०९६४०

अक्षर मिलान –
विजय कुलकर्णी, नाशिक

मूल्य –
अंगदान के प्रबोधन हेतू विनामूल्य वितरण

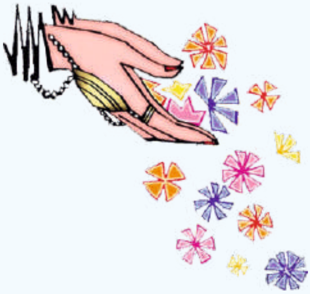

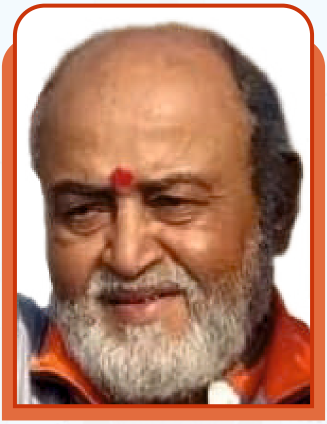

सच्चा अंगदान कार्यकर्ता

मेरी कविताओंका चाहता

और मुझे गुरु बोलने वाला

मेरा करीबी मित्र

कै. शैलेश देशपांडे

की पवित्र स्मृती पे सादर अर्पण

‘चारलाईना’

कॉपीराइट के बारे में

मैं इन चार लाइनाओके बारे में कौन सा भी कॉपीराइट रखना नहीं चाहता। इसकी वजह यह है कि ये पंक्तियां मैने लिखी है इसका मेरी दृष्टीसे कोई महत्व नहीं है। उनके जरिए जो विचार प्रस्तुत किया है उस विचार का और वह विचार फैलाने का महत्व मेरी दृष्टि से बहुत ज्यादा है। चार लाइने आप किसी को भी भेज सकते हो मेरे नाम से या खुद के नाम से, लेकिन इसमें जो विचार बोया है वह फैलाने वाले किसी को भी मेरा सलाम!,

मेरे प्यारे वाचक और श्रोतागण

सादर प्रणाम,

पीछली १७ साल से अंगदान के कार्य से जुड गया हू । २०१६ से २०२० तक ४ बरस में ४ पदयात्राओं की माध्यम से महाराष्ट्र के सारे जिलों में मैं घूम चुका हूं । लगभग ४००० किलोमीटर की दूरी चलते-चलते तय कर चुका हूं । हजारों लोगों से बात करके इस विषय का महत्व समझाने का प्रयास किया है। लेकिन २०२० में मेरी चौथी पदयात्रा पूरी करने के बाद मार्च महीने में लॉकडाउन हो गया और समझो सारा जीवन ही थम सा गया। फिर भी हम सभी कार्यकर्ता ऑनलाइन मीटिंग्स, वेबीनार, झूम मीटिंग्स, गूगल मीट ऐसे कई साधनों से एक दूसरे से जुड़ते थे। बात करते थे। प्रबोधन करते थे। लेकिन घर में बैठे-बैठे बोर भी होते थे। पर सोशल मीडिया हमारे हाथ में रहता था। यह बड़ी अच्छी बात थी। इतनी बरस इसी सोच में डूबा रहता था और कवी होने के नाते कुछ ना कुछ पंक्तियां मन में गूंजती रहती थी। तो मैं व्हाट्सएप, फेसबुक ऐसे माध्यमों के जरिए रोज कुछ ना कुछ छोटी-छोटी चतुष्पदियां लोगों तक पहुंचाने की कोशिश करता रहा। बहुत सारे लोगों को वह पसंद आने लगी। रोज एक चतुष्पदी लिखकर मैं सोशल मीडिया पर डालता था और उसको प्रतिसाद भी अच्छा मिलता था। देश के कोने-कोने से प्रतिक्रिया आने लगी।

दिल्ली, कोलकाता, भुवनेश्वर, कोयंबटूर, मुंबई, जयपुर ऐसे दूर-दूर से लोगों को यह पसंद आने लगी।

२०२२ के सितंबर महीने में दिल्लीकी दधिची देहदान समिति ने, सभी देशके कार्यकर्ताओंको इकट्ठा करके एक अधिवेशन बुलाया था। उस अधिवेशन में बहुत सारे लोग ''चार लाइना वाले देशपांडे'' करके बुलाते थे। बहुत सारे लोगों ने सब चतुष्पदियां इकट्ठा करके पुस्तक बनाने का आग्रह किया। तभीसे हमारी संस्था, दि फेडरेशन ऑफ ऑर्गन ऐंड बॉडी डोनेशन के सभी मित्रगण पीछे पड़े थे। फेसबुक, मोबाइल, लैपटॉप से ढूंढ ढूंढ के बहुत सारी चतुष्पदियां निकाल के अभी ई पुस्तक के जरीये आप सब तक पहूंचा रहा हूं। मुझे आशा है, कि आप इसका जरूर स्वागत करेंगे। आपकी प्रतिक्रिया जरूर जरूर भेजना।

- सुनील देशपांडे
पुणे-नाशिक

१.

इन्सानियत बची है कहाँ ?
दुनिया में इस जमाने में ?
मैंने कहा, यहाँ आकर देखो,
अंगदान के बढ़ते आंकड़ों में ।

२.

खिलेंगे फूल इसी तरह हर रोज मेरे बाद भी,
कोई मुरझानेवाला खिलने दो मेरे बाद भी ।
हो सके अंगदान ये तमन्ना रहेगी जिंदगी भर,
किसी को जिंदगी मिले जिंदगी के बाद भी ।

३.

प्राणवायु जो लुटा रहे हैं, पत्ते रहने दो पेड़ों पर ।
प्रकृति का आनंद लुटाओ, खुशियाँ चेहरे पर ।।
दुनिया से जाने से पहले, खुशी खिले किसके चेहरे पर ।
सोच सही, संकल्प अभी कर, देहदान कर, अंगदान कर ।।

४.

अंग अंग में जंग उठा है ।
रग रग में भी रंग भरा है।
हाँ कर दूँ या ना कर दूँ मैं,
सोच भिन्न, पर कार्य खरा है।

५.

प्राण दान में पुण्य भरा है ।
अंगदान ही प्राण दान है ।
सोच समझ के निश्चय मेरा,
अंगदान संकल्प किया है ।

६.

अंग अंग उप–अंग हमारे ।
या दे दूँ या रख दूँ सारे ।
जलने से बेहतर जिंदा हो ।
किसी के अंदर रहेंगे प्यारे ।

७.

हम न रहे तो दुनिया डूबी ।
लोग बताते हैं ये खूबी ।।
अंगदान से हम रह जाए ।
डुबे न दुनिया मेरी खूबी ।

८.

दिल अपना और प्रीत पराई ।
अपने दिल पे प्रीत जताई ।
अंगदान से दिल दूँ किसको ।
पराया दिल, पर पायी खुदाई ।

९.

अंग अंग का कतरा कतरा ।
बूँद बूँद ना खून का मेरा ।
लौटाऊँ जाने से पहले ।
अंगदान कर्तव्य है मेरा ।

१०.

चमड़ी आँखें अंग ये मेरा ।
देह लगे ये कितना प्यारा ।
उसे न जलने दूँ मैं कभीभी ।
देहदान का दिया है नारा ।

११.

सब कहते, मौत ही है मंजिल ।
अपनी उससे आगे मंजिल ।
देहांगदान संकल्प किया है ।
किसे नयी जिंदगी है मंजिल ।

१२.

पत्ते पेडसे गिरते हैं, खाद बन जाते हैं ।
नव निर्माण के लिए जान बन जाते हैं ।
इंसान जब भी अंगदान करता है ।
किसी नवजीवन की आशा बनता है ।

१३.

तुम ना रहोगे हम ना रहेंगे ।
हम ना रहे तो अंग रहेंगे ।
दान किया है पुण्य किया है ।
नाम नहीं पर काम रहेंगे ।

१४.

अंगदान की, सोच दे रहे,
ज्ञान दे रहे, पुण्य बो रहे ।
मानवता की ज्योत लगाके,
मन मन मे विश्वास दे रहे ।

१५.

कार्य बढ़ रहा, लक्ष्य बड़ा है ।
तप्त सड़क पर वृक्ष नहीं है ।
अंगदान से मौत भगाना ।
चल तो पड़े है, मार्ग सही है ।

१६.

कोई तो मुस्कुराएगा, न उसका पता चले ।
जिंदगी मिले किसे, न उसका पता चले ।
उम्मीद औ' जिगर लिए, आज हम चल पड़े ।
अमर ना बनाएंगे, उमर बढाते तो चले ।

१७.

हम चल तो पड़े हैं दोस्ती करने मौत से ।
क्या मालूम, पाला पड़ेगा किस किस से ।
अंगदान तो बहाना है मौत से दोस्तीका ।
किसे दुबारा जिंदगी मिले हमारी दोस्ती से ।

१८.

राम, रहिम या ईसा हो, सबके काम है नेक ।
अंगदान हो किसका भी, कर्म सभीका नेक ।
धर्म जाति ना अंग को, नेक भाव से दान करो ।
अंगदान से जुड़े रहो, सबका मालिक एक ।

१९.

देनेवाले ने दिये हाथ ।
लेनेवाले ने लिए हाथ ।
लेनेवाला बन गया दाता ।
अंगदान की देकर साथ ।

२०

है तेरे मंत्र में दम तो दिखा दे ।
मुर्दे को फिर से जिंदा कर दे ।
या फिर सिर्फ अंगदान करके ।
मरते हुए की जिंदगी बचा दे ।

२१

गीता कहे शरीर वस्त्र है आत्मा का।
वस्त्र छोड़े जब रास्ता पकड़े घर का।
वस्त्र क्यों जलाते हो उस आत्मा के।
ढकेगा बदन किसी तडपते आत्मा का।

२२

वाह–वा करें जिंदापन मे अपने ही दो यार।
बाद मौत के भूलेंगे जब बीतेंगे दिन चार।
अंगदान तू करले, जिंदगियाँ बस जायेगी।
कृतज्ञता से याद करेंगे बार–बार दो चार।

२३

एक दिन मृत्यु आ जायेगा।
साथ तुम्हे भी ले जायेगा।
अंगदान तू कर ले प्यारे।
मृत्युंजय तू कहलाएगा।

२४

पुण्य गठित क्या कर पायेगा सारी जिंदगी।
व्यवहारोंकी उलझन में था सारी जिंदगी।
अंगदान कर उलझन सारी मिट जायेगी।
जाते जाते पा जायेगा सारी जिंदगी।

२५

दौलत जिसके पास वो दाता ।
गरीब चाहे तो क्या करता ?
अंगदान है श्रेष्ठ इसलिए ।
करेगा इच्छा बनेगा दाता ।

२६

रक्तदान से जीवन सुखमय ।
देहदान से मृत्यु सुखमय ।
अंगदान मैं कर जो सकूं तो ।
मैं मृत्युंजय मैं मृत्युंजय !

२७

मानवता मन रंग भरेंगे ।
अंग अंग में सब उभरेंगे ।
जरुरत क्या तब हमें कार्य की ।
अंगदान जब सभी करेंगे ।

२८

फल, फूल शाखाएँ पत्ते ।
वो सब तो देते ही रहते ।
यारो कुछ तो सीखो उनसे ।
देहांगदान संकल्प जो करते ।

२९

अंग अंग मे राम, हर दिल में रहे श्रीराम ।

कतरा कतरा खून का बोले जय श्रीराम ।

खून दिया या अंग, साथ ही जाते राम ।

अंगदान जब सभी करें, सबमें बसे श्रीराम ।

३०

बढती है उम्र तो घट जाती है जिंदगी ।

दवा, दुवा से तसल्ली पाती है जिंदगी ।

जिंदगी का तजुर्बा हम से ही जान लो ।

अंगदानसे हर किसीकी बढती है जिंदगी ।

३१

माटी ही है अंत तुम्हारा माटी ही है मोल ।

अंग अंग उपअंग तुम्हारे होंगे माटीमोल ।

जाते जाते लौटाएगा जिंदगी किसीकी ।

जीवन सफल रहेगा होके औ’ होगा अनमोल ।

३२

हम नहीं चाहते मौत पे विजय पाना ।

हम चाहते है मौतसे दोस्ती करना ।

जब सच्चे दोस्त साथमें जुडते है ।

तय होता है कार्यमें सफलता पाना ।

३३

जरूरत पड़ने पर ही, ईश्वर को कहते दाता ।
जरूरत पड़ने पर ही ढूंढे, अंगदान का दाता ।
प्रार्थना रहे या अंगदान, जरूरत पड़ने पर नहीं ।
जरूरत के बिन जब करो, सुने उसी की दाता ।

३४

कैसे आऊँ पास तुम्हारे आधा अधुरा ।
अंगदान से रह जाऊँगा आधा अधुरा ।
अंगदान कर, पुण्य का घड़ा भर जायेगा ।
पूरी जिंदगी कभी नहीं था आधा अधुरा ?

३५

ऐ मौत वादा है तुझसे नयी जिंदगी का ।
जब खटखटाए दरवाजा मेरी जिंदगी का ।
किसी को तेरे दरवाजे से वापस भेजना ।
यही मकसद है अभी मेरी जिंदगी का ।

३६

मौत के बाद क्या कीमत इस देह की ।
मृतकों के किसी भी अंगों की ।
पर जब अंगदान हो जाये ।
मौत भी राह छोड़े जिंदगी की ।

३७

मुहलत साँसों की जहाँ तक, जी लेंगे ।
जीवन में सद्भावनाओंको, भर लेंगे ।
सांसों की मुहलत के बाद चाहेंगे तो ।
देहांगदान से फिर एक बार जी लेंगे ।

३८

रिश्ते बनेंगे दोस्ती के ।
या बनेंगे जिस्म के ।
अंगदानसे भी बनेंगे ।
रिश्ते नये जनम के ।

३९

मेरी मौत का गम न कर मेरे दोस्त ।
अंगदान का जश्न मना मेरे दोस्त ।
जिंदगी तो इक दिन जानी ही है ।
पर देने की सोच तू भी मेरे दोस्त ।

४०

उम्र निकल गयी तो क्या, जिगर बाकी होती हैं।
मौत भी आयी तो क्या होगा, अंग बाकी होते हैं।
जिंदगी भर रिश्ते जोड़े, मौतके बादभी जुड़ सकते है ।
मौतसे दोस्ती करके हम, कुछ पल और जीते है ।

४१

रिश्ता तो होता है खून का ।
और भी होता है दिल का ।
पर किसे नयी जिंदगी दे ।
वह होता है अंगदान का ।

४२

दुआ मुझ पर इतनी कबूल कर ।
मेरे अंगों पर इतना रहम कर ।
मौत उनको भी छूने से पहले ।
किसी और के जिस्म में बसर कर ।

४३

मेरी जिंदादिली तूने देखी कहाँ ।
जीने की ख्वाहिश भी देखी कहाँ ।
ऐ मौत मेरी ख्वाहिश सुनाऊँ तुझे ।
मेरे अंग ना देखे कोई दूसरा जहां ।

४४

सजा–ए–मौत मिलनी है तुझे ।
जन्नत या जहन्नुम मिलनी है तुझे ।
मौत के पहले अंगदान तो कर ।
जन्नत तो मिलनी तय है तुझे ।

४५
जिंदगी में पापों का घड़ा भरके इंसान ।
कैसे जाओगे ऊपर बुलाएगा भगवान ।
अंगदान से पाप तो सारे धुल जाएँगे ।
तब रहम करेगा तुझ पर भी भगवान ।

४६
देखा है मौत को जिसने करीब से ।
जाने सिर्फ वही, होता क्या अंगदानसे ।
स्वर्ग और नर्क उसने ही देखा है यारों ।
झगड़ते झगड़ते जिंदगी और मौत से ।

४७
बारिश तो बस गिरती है ।
कहाँ ? ये सोचती कहाँ है ।
हमभी अंग दान करते हैं ।
किसको ? सोचते कहाँ है ।

४८
अंगदान की बात पट गई ।
मय की लत तो छूट गई ।
किसी की देन है ये अंग ।
इनकी हिफाजत पट गई ।

४९

बारिश का काम है गिरना ।
दाता का काम है देना ।
फायदा क्यों, किसका ?
ऊपर वाले से पूछना ।

५०

अंगदान खाता हूँ अंगदान पीता हूँ ।
अंगदान की नशे में धुत रहता हूं ।
जब आप जैसे नशेबाज मिलते हैं ।
नशेका और भी लुत्फ उठाता हूँ ।

५१

आँखोंमें रोशनी है रास्ता दिखाएंगे ।
बाद में नेत्रदान से दृष्टि दिलाएंगे ।
जीवनभर का कर्ज जो चुकाना है ।
जाते जाते ब्याज तो चुका देंगे ।

५२

बेझिझक और बेहिसाब ।
करो अंगदान ओ जनाब ।
किसीको मौत से बचाना ।
यह काम ही है लाजवाब !

५३

कितनोंको कुछ कुछ देता है वो ।
छप्पर फाड़ के भी देता है वो ।
पर जो अंग फाड़कर दे जाता है ।
उससे आखिर हार जाता है वो ।

५४

जिंदगी की चाहत नही ।
मौत से शिकायत नही ।
जिंदादिली बहुत देखी ।
पर अंगदान जैसी नही !

५५

इशारे क्या कमाल के हैं ।
लगता तो वही के वहीं है ।
नेत्रदान करके गयी थी वो ।
ये आँखें वहीं तो नहीं है ?

५६

मौत टलती नहीं पर आस जीने की है ।
चाह अंगदान की, तो बात बनती रहें ।
जान भी तो लो क्या होता अंगदान से ।
किसी की मौत टलती रहे जान बचती रहें ।

५७

जिंदगी की देन है, जिंदगी को वापिस करो।
मौत के बाद ना दफना करो ना जलाया करो।
किसी को मिले जिंदगी, किसे नयी नजर।
दुनिया से बिदा होने से पहले अंगदान करो।

५८

किसी को मिले जिंदगी, किसे नयी नजर।
किसी को दिल भी मिला दिलदार बेखबर।
अंगदान की दुवा देकर वो चल बसे फरिश्ते।
फिर भी जमाना सो रहा अंगदान से बेखबर।

५९

जीना सभी जीते हैं,
मौत भी सभी को है।
मौत के बाद जिंदगी।
तो अंगदान से ही, सही है।

६०

संकल्प तुम्हारा सच्चा।
पर उसमें भी एक लोचा।
मरने के बाद में तुम नहीं।
परिवार विचार हो सच्चा।

६१

उसकी मोहब्बत दुनिया छोड़ गयी ।
उसको रुला रुलाकर छोड़ गयी ।
ये कैसी है अंगदान की दिल्लगी ।
दिल पराया करके यही छोड़ गयी ।

६२

सुनते सभी जिंदगी की धडकन ।
सुनो कभी मौत की भी धड़कन ।
सोचे समझे अंगदान तो कर लो ।
पायेगा कोई फिरसे नयी धड़कन ।

६३

जिंदगी की कुर्बानी नहीं माँग रहा हूँ ।
आपके मौत की कुर्बानी माँग रहा हूँ ।
अंगदान करो मौत की कुर्बानी देकर ।
किसी जिंदगी की दुआ माँग रहा हूँ ।

६४

वस्त्र दान जो करते हैं ।
पुण्यात्मा कहलाते हैं ।
शरीर आत्मा का वस्त्र ।
क्यों नहीं दान करते हैं !

६५

कोई जीते–जी मरता है ।
कोई मरके भी जीता है ।
अंगदान से जिंदगी पाओ ।
मरना तो सबका तय है ।

६६

अपनी ये जिंदगी है कुदरत की देन ।
चेहरे की मुस्कुराहट कुदरत की देन ।
अंगदान करो ज़िंदगी से जाते–जाते ।
किसी को लौटा दो कुदरत की देन ।

६७

जिंदगी की मौत से लड़ाई ।
जिंदगी की जीवन से जुदाई ।
अंगदान के करिश्मे से होगी ।
जिंदगी की जिंदगी से सगाई ।

६८

जिंदगी चुस्त है, अंग भी मस्त है ।
दे दूँ किसे ये सोच भी दुरुस्त है ।
मुमकिन कैसे पूछिये आप भी ।
अंगदान संकल्प मेरा दुरुस्त है ।

६९

गरज गरज के बरसा पानी ।
हरी–भरी बन सुखमय अवनी ।
अब सद्भावों को बरसाओ ।
त्वचा, नेत्रके बन सब दानी ।

७०

करो अंगदान ।
मिले भगवान ।
बे–झिझक माँगो ।
उसे मोक्षदान ।

७१

आशाएँ भर अरमान लिए, अंगदानकी रेस में ।
मिनट मिनट हर व्यक्तीकी, मृत्यु है अपने देश में ।
उन सबको बचाने का, अरमां दिलमे रख्खे है ।
हम है नादाँ और दीवाने, अंगदान के कार्य में ।

७२

घर का नल जब शुष्क है ।
तब बारिश की याद है ।
कोई अंग नाकाम तभी ।
अंगदान याद आता है ।

७३

चाहूँ खुश किस्मत हो जाऊँ।
मस्तिष्क स्तंभसे मृत हो जाऊँ।
जान बचाऊँ आठोंकी और।
सच्चा मृत्युंजय कहलाऊँ।

७४

इस धरती पर जीना है।
इस धरती पर मरना है।
देहदान करके भी हमें।
इस धरती पर रहना है।

७५

मानवता के इस आंगन में।
उलझे काहे को उलझन में।
मानवता को गले लगाओ।
संदेश यही है अंगदान में।

७६

घनबरसे और सूरज चमके।
तृण पत्तोंपर मोती चमके।
नवसंजीवित धरा देखके।
अंगदान मेरे मन में चमके।

७७

इंद्रधनुष के रंग अनोखे।
सावन ऋतु में कैसे दमके।
किन आंखोंमें रंग भरूं मैं।
नेत्रदान की इच्छा चमके।

७८

सुजल सुफल और गंधित धरती।
नील गगनसे बिखरे मोती।
प्रकृति का दातृत्व देख कर।
अंगदान सोचूं हो पूर्ती।

७९

जिंदगी से बड़े हौसले मेरे।
मौत से भी बड़े हौसले मेरे।
देहांगदान की तमन्ना मेरी।
हौसलों पर खड़े हैं इरादे मेरे।

८०

प्रसन्न भी और प्रलयंकारी।
चमत्कार हैं प्रकृती सारी।
चमत्कार है नेत्रदान भी।
अंधा देखे दुनिया सारी।

८१

लोग जान देते हैं, जान लेते भी है ।
लोग फिसलते हैं, लोग बदलते हैं ।
लोग संकल्प करके, मुकरते भी है ।
आपका देहांगदान, ऐसा तो नहीं है ?

८२

ग्रीष्मदाहमें देहदाह से धरा त्वचा जल जाती ।
हराभरा देह नया फिर सावनमे लेके आती ।
प्रकृति का ये त्वचादान है समझो वसुंधरा को ।
त्वचादान की अद्भुत किमया प्रकृति है समझाती ।

८३

एक एक शख्स कभी ज़िंदगी को वीरान कर गया।
एक एक पल कभी जिंदगी को सुनसान कर गया।
अब बाकी जिंदगी से न कुछ मांगू मरते दम तक।
एक अंगदान ही मेरी जिंदगी को आबाद कर गया।

८४

किसी को मौत से बचाना है ।
तो कहते हैं जान हाजिर है ।
अंगदान की बात ही न्यारी है ।
हम कहते है मौत हाजिर है ।

८५

पेड काट के क्या सुख पाया ?
प्रकृति का फिर तांडव पाया ।
देहदान संकल्प किया है ।
मैने है एक पेड़ बचाया ।

८६

तकदीर खुदकी ना बदल सकूं ।
उम्मीद है किसीकी बदल सकूं ।
अंगदान का संकल्प किया है ।
चाहूं आखिर ब्रेनडेड हो सकूं ।

८७

जिन अंगोंकी हिफाजत में, मैं जिया हूँ उम्र भर ।
हर सुख दुख, सह लिया मैंने इन्हीं के जिगर पर ।
इन्हें न दफनाने की, ना मैं जलाने की भी सोचूं ।
देहदान संकल्प है किया, अब भरोसा आप पर।

८८

जीते रहेंगे और मिलते भी रहेंगे ।
स्वास्थ्य संभालो तो जी के रहेंगे ।
सच हो जो संकल्प अंगदान का ।
जिंदगी के बाद भी जीते रहेंगे ।

८९

अपने हाथ नहीं किसी से इश्क होना ।
पर मोहब्बत खुद से भी जरूर करना ।
जरूर चाहोगे जिंदगी के बाद जिंदगी ।
तो कैसे भूलोगे, अंगदान है करना ?

९०

मुफ्त की कदर कोई क्या जाने ।
जिंदगी की कीमत कोई क्या जाने ।
पूछो अंगके लिये तरसने वालों से ।
उनसे अच्छा कोई और क्या जाने ।

९१

बरसों से चलते हैं दिलदारोंके सिलसिले ।
बरसों से चलते हैं दाताओं के सिलसिले ।
अंगदान तो यहाँ अभी अभी उभर रहा है ।
चलो शुरू करते हैं अंगदान के सिलसिले ।

९२

ऐ मौत यदि तुझे आना ही है ।
दिलके दरवाजेसे नहीं आना है ।
दिमाग पर कब्जा जमाके आ ।
मुझसे अंगदान जो करवाना है ।

९३
यदि देहदान करोगे ।
एक पेड़ बचाओगे ।
और ना करोगे तो ।
सवाल खड़ा करोगे ।

९४
अंगदान से बचती है जिंदगी ।
अंगदाता बढ़ाता है जिंदगी ।
यदि डॉक्टर ही ना हो तो ।
कौन दे सकेगा नई जिंदगी ?

९५
भटके हुए राही को चला हूं राह दिखाने ।
जंगल भी नया, रास्ते भी नए सुनसान अनजाने ।
निभानी है अंगदान के प्रति प्रतिबद्धता ।
धुन ये नयी है निकला हूँ सबको सुनाने ।

९६
मानो तो एक नया रिश्ता बना सकते हो ।
अंगदान से खून का रिश्ता जोड़ सकते हो ।
वरना रिश्तों पर कितना भरोसा होता है ।
नये रिश्तों को भी तो आजमा सकते हो !

९७

मैं आपके पास भी आऊँगा।
बुलाएंगे तो जरूर आऊँगा।
पचास आदमी इकठ्ठा करलो।
मृत्युंजय मंत्र को लेके आऊंगा।

९८

कुछ अपने भी अनजान होते हैं।
कुछ अनजान भी अपने होते हैं।
अंगदान से जो रिश्ते जुड़ जाते हैं।
वे ना जाने कौन, पर अपने होते हैं।

९९

शमशान में सब जलते, राजा हो या फकीर।
देहदान वालों की, अलग ही होती है लकीर।
तकदीर उनकी अलग होती है, जलनेवालोंसे।
वो उस उँचाईपर पहुँचते जहाँ ना राजा ना फकीर।

१००

अंगदान की कही में कितनी जहमत उठानी पड़ती।
अंगदान की कृतीमें उससे भी ज्यादा उठानी पडती।
पर संकल्प और कृति भी जरूर जरूर करना है।
मौत के करीब किसी को तोहमत नहीं उठानी पडती।

१०१

आँखो ही आँखोंसे रोब जमाती है तू ।
मेरी जिंदगी पर कब्जा जमाती है तू ।
मेरे बाद उसको अंतिम अंजाम दे दे ।
मेरी आँखोका, अंगोंका दान कर दे तू ।

१०२

दोस्त सिलाते है टूटी हुई जिंदगी के धागे ।
अंगदाता सिलाता है फटी जिंदगी के धागे ।
दोनो की भूमिका बड़ी अहम है जिंदगी मे ।
दोनों एक है तो मजबूत है ज़िंदगी के धागे ।

१०३

इंसान के किरदार में हो, अच्छे हो ।
इंसानियत निभाते, अच्छे लगते हो ।
अंगदान भी तो इंसानियत का काम ।
निभाते हो तो बेहद अच्छे लगते हो ।

१०४

अपने तो अपने ही होते हैं ।
कभी वो भी पराये होते हैं ।
अंगदान से जो अपने बनते ।
जनम भरके रिश्ते बनते है ।

१०५

ना मालूम उसे अंग किसने दिया ।
पर अंगदान बिरादरी से ही आया ।
सारे अंगदाता ही सच्चे रिश्तेदार ।
उन्हींके संकल्पों से ही कोई आया ।

१०६

भारत के वैज्ञानिक फिर उभरते ।
फिरसे प्रयास करके जीत जाते ।
वैसे अंगदान के कार्यकर्ता भी ।
अथक प्रयास करते ही रहते ।

१०७

करते ही रहेंगे प्रयास और प्रयास ।
तभी पाएंगे कार्यपूर्ति की मिठास ।
अंगदान कार्य की यही है पहचान ।
मनमे शक नही पर पूरा है विश्वास ।

१०८

जिंदगी खुद एक नशा है ।
पर मौत सच्ची हकीकत है ।
निकलेगा नशेसे बाहर तो ।
अंगदान किसीकी जरूरत है ।

१०९

अंधविश्वास से अविश्वास तक ।
अविश्वास से फिर विश्वास तक ।
अंगदान कार्य के ये दो पड़ाव है ।
फिर पहुँचना लोगों के मन तक ।

११०

इस्तेमाल दिमाग का करो ।
कदर भावनाओं की करो ।
सिर्फ इतना ही करोगे तो ।
जरूर कहेंगे अंगदान करो ।

१११

जब इस्तेमाल भावनाओं का करेंगे ।
और दीमाग की कदर ही ना करेंगे ।
तब गड़बड़ घोटाला होते ही रहेगा ।
लोग अंगदान की बात भी ना सुनेंगे ।

११२

ना जहन्नुम की करो बात ।
अब जन्नत की होगी बात ।
अंग की बीमारी जहन्नुम है ।
तो जन्नत है दाता की बात ।

११३
मुश्किलों को कुचल दो इरादों से।
विछिन्न करो हौसलों की तोपोंसे।
अंगदान कार्यकी नींव जो रखी है।
काम न चले मुश्किलों को डरने से।

११४
कुदरत अनेक हाथों से देती है।
हम सिर्फ दो हाथों से लेते हैं।
फक्र करते है उसे कुछ देने में।
अंगदान संकल्प जब करते है।

११५
संकल्प में यदि सिद्धी है।
तो जिंदगी भी जिद्दी है।
संकल्प करके देख लो।
देहांगदान सद्बुद्धि है।

११६
क्या खोना क्या पाना जिंदगी के बाद।
क्या लेना क्या देना जिंदगी के बाद।
अंगदान की कृति से कुछ दे सकते हो।
दे सकते हो जिंदगी, जिंदगी के बाद।

११७

तंत्रसिद्ध होना है ।

कार्यसिद्ध होना है ।

अंगदान के लिए ।

प्रतिबद्ध होना है ।

११८

क्या हम ज्ञानाभिलाषी है ?

क्या हम सु–प्रशिक्षित है ?

अंगदान के कार्य के लिए ।

क्या हम प्रतिज्ञाबद्ध है ?

११९

हमें आश्वासित करना है ।

हमें विश्वास दिलाना है ।

समाज को अंगदान के प्रति ।

स्वयं प्रेरित बनाना है ।

१२०

सुबुद्ध, प्रबुद्ध, प्रतिबद्ध रहेंगे ।

कार्यश्रद्ध कटिबद्ध भी होंगे ।

हम अंगदान जनजागर सिद्धी ।

सत्कार्यसिद्ध सहकार्य करेंगे ।

१२१

बहुतेरोने दुआ तो माँगी थी मृत्युकी ।
पर दोस्तों ने माँगी थी जिंदगी की ।
जिंदगी भी इतनी नटखट निकली ।
अंगदान से कबूल हुई दुवा दोनों की ।

१२२

मैं खुद में नहीं रहता इस कार्य में ।
मैं होश में भी नहीं रहता कार्य में ।
मुझे नशाबाज ना कहना ऐ दोस्त ।
झूम जरा तू भी अंगदान के कार्य में ।

१२३

जीते जागते की ही जिंदगी होती है ।
जिंदगी के बाद सिर्फ मौत होती है ।
जीते जागते अंगदान संकल्प करो ।
जिंदगी के बाद भी जिंदगी होती है ।

१२४

हम तो मंजिलें ही ढूंढते हैं ।
पर मुश्किलें हमें ढूंढती है ।
मजेमें चल रही लुकाछुपी ।
अंगदान कार्य चल रहा है ।

१२५

जलता है रुई और तेल, कहते दिया जल गया।
बचाता है डॉक्टर, कहते नसीब से बच गया।
अंगदान करता है कोई गुमनाम अंगदाता।
फिर भी कहते, किसी की कृपा से बच गया।

१२६

प्राणदान में पुण्य भरा है।
अंगदान ही प्राणदान है।
सोच समझ के निश्चय मेरा,
अंगदान संकल्प किया है।

१२७

कहते है, समंदर का पानी अपार है।
पर वो नदियों का उधार होता है।
वैसे ही है अपने अंगों की बात।
अच्छे है पर कुदरत के उधार है।

१२८

जिंदगी का कर्ज उतारना चाहता हूँ।
जिंदगी को जिंदगी देना चाहता हुँ।
मौत को वैसेभी चकमा दे सकता हूँ।
मैं अंगदान या देहदान कर सकता हूँ।

१२९

एक कदम स्वच्छता की ओर ।
पर्यावरण के भविष्य की ओर ।
देहदान से एक कदम बढ़ाओ ।
नयी पीढ़ी की स्वास्थ्य की ओर ।

१३०

नया आदमी नया तजुर्बा ।
नयी हो घटना नया तजुर्बा ।
समाजकार्य देगा समृद्धी ।
हर दिन पाओ नया तजुर्बा ।

१३१

जान जाती है तो दान बचता है ।
दान ही नहीं तो क्या बचता है ।
अंगदान का अंगिकार करेंगे ।
अनजानों की जाने बचती है ।

१३२

चलो हम मिलकर चले ।
चलो हम साथ साथ चले ।
अंगदान के कार्य के लिए ।
हाथ मिलाते, बढ़ाते चले ।

१३३

गुजरती नहीं जिंदगी अपनों के बिना ।
थमती भी नहीं जिंदगी किसी के बिना ।
थम भी सकती है जिंदगी अंगदान से ।
पर मुमकिन नहीं आपके निश्चय बिना ।

१३४

आँखों की नजर नहीं, देखो दीमाग की नजर से ।
पेड़ भी दौडते नजर आते रेल की खिडकीयों से ।
जिंदगी देने की बात सोचो दिल और दीमाग से ।
अंगदान की सोचो दीमाग से भी, ना सिर्फ दिल से।

१३५

विचार सीमाओंके पार जाना है ।
हमे सीमोल्लंघन जो करना है ।
देहांगदान भी लेजाएगा उस पार ।
जहाँ मानवता का सोना लुटता है ।

१३६

तन्हाई, जुदाई, बेवफाई ।
सारी इश्क की है कमाई ।
अंगदान है आखरी आस ।
शायद हो सके दिल जमाई ।

१३७

पहले यह तो तय करो कि, देना है ।
फिर तय होगा क्या, कितना देना है ।
अंगदान संकल्प की जब ठान ली है ।
मौत के बाद जो मुमकिन सब देना है ।

१३८

क्या मालूम मौत कहाँ से आयेगी ।
मालूम नहीं वो मौत कैसे आयेगी ।
मेरे बाद सच में जो मेरे अपने हैं ।
अंगदान पूर्ति उनसे ही की जायेगी ।

१३९

जब जीवनरंग अंधेरा हो ।
जब लगे न कोई सहारा हो ।
तब इंद्रधनू बिखेरेंगे हम ।
और नेत्रदान मृत्युंजय हो ।

१४०

कभी ना कभी तन जलनेवाला है ।
वक्त तो हररोज कब्र खोद रहा है ।
देहांगदान निर्णय करो आज अभी ।
कब्र से, जलने से छुटकारा पाना है ।

१४१

मृत्यु पर ना जोर कोई।
मृत्यु से बचा न कोई।
अक्षर पढ़े जो अंगदान के।
वह सच्चा मृत्युंजय होई।

१४२

बेटा, तू तो मेरा अपना है।
अंगदान तो मेरा सपना है।
साकार रहे सपना ये मेरा।
सब दुनिया को दिखाना है।

१४३

संकल्प पत्रको है भर देना।
सबको एक दिन है जाना।
मिल पाए कोई, बात करो।
जरूरी है सबको समझाना।

१४४

संकल्प है कि, अंग न अपने हैं।
किसी जीवन के सुहाने सपने है।
मुकर न जाये वो इन वादों से।
मैं कहूँ उन्हें, जो मेरे अपने है।

१४५

कार्यभक्तीमे झूम लो ।
मुश्किलों को चूम लो ।
जनप्रबोधन कार्य में ।
सब्र शांती से काम लो ।

१४६

कुछ गंवाये बिना हम यदि कुछ पाते हैं ।
किसी की जानपे हम मौत लुटा देते हैं ।
उस अदाको किसी की रेहमत न समझो ।
ये अंगदान के विचारों की की इनायत है ।

१४७

किसी की जिंदगी संवरने का मकसद रखो ।
किसी के गमों को मिटाने का मकसद रखो ।
अपनी सारी जिंदगी जीने के बाद भी सही ।
अंगदान से जिंदगी देने का मकसद रखो ।

१४८

मैं चटक धूप में भटक रहा हूँ ।
जिंदगी के नाटक निभा रहा हूँ ।
सर पे बर्फ, मुँह में चीनी रखके ।
अंगदान का कार्य निभा रहा हूँ ।

१४९

अंगदान की अपनी एक अदा है।
मौत भी जिंदगी पर फिदा है।
अंगों से अंग अलग होकर भी।
जिंदगियाँ बचाने का वादा है।

१५०

मृत्यु कथा है वही पुरानी।
हमे फिरसे नहीं दोहरानी।
अंगदान कर देह दान कर।
मृत्यु जिंदगी नई कहानी।

१५१

डॉक्टर अपना रक्षक है
हम भी उसी के शिक्षक है।
देहदान जब हम कर सकते।
तो, देहदान हीं ज्ञानदान है।

१५२

कैसा जीवन कैसी उदासी।
बेबस ये जिंदगी है कैसी।
लगे यदि तो अंगदान कर।
दान भगाये सारी उदासी।

१५३

हर मुलाकात का अंजाम जुदाई है।
हर जिंदगी का अंजाम मौत ही है।
अंगदान का अंजाम नई जिंदगी है।
इसलिए जानो, अंगदान ही खुदाई है !

१५४

खुद के लिए जीना मृत्यु समान है।
औरों के लिए मरना जिंदगी समान है।
और मृत्यु के बाद अंगदान हुआ तो।
अंगदान करनेवाला ईश्वर समान है।

१५५

मृत्यु रोकने से नहीं रुकता।
मृत्यु किसे भी नहीं छोड़ता।
अंगदान जरूर कर प्यारे।
अंगदाता मर नहीं सकता।

१५६

तू अंगदान का संकल्प कर प्यारे।
अंगदान से बिल्कुल ही मत डरे।
सुना है, डर गया समझो मर गया।
जिंदगी जीना है तो फिर क्यों डरे ?

१५७

मैंने ख्वाबों में भी मौत की जगह जिंदगी देखी है ।
मैंने तो खुदको जिंदगी की ही दौलत समझा है ।
अंगदान करके ही लौटा दूँगा उसकी दौलत ।
जिंदगी को जिंदगी मिले यही मेरा ख्वाब है ।

१५८

कहते हैं ख्वाबोंके पकड़ में है दुनिया ।
हमारे भी ख्वाबों में है एक दुनिया ।
अंगदान बने एक सर्वदा परंपरा ।
अंगदान को खबर न माने दुनिया ।

१५९

पेड़ तो प्राणवायु देते हैं ।
उससे जिंदगी बचती है ।
मेरे साथ पेड़ को न मारो ।
दोनों की जिंदगी बचानी है ।

१६०

जिंदगी की जिद बाकी रखनी है ।
मौत को निराश वापस लौटाना है ।
मौत को बहुत सारे मिल जायेंगे ।
पर जिंदगी की आशाएँ बढ़ाना है ।

१६१

खो जाऊं अंधेरे में पर ज्ञान ज्योति जलाऊं,
मृत्यु के बाद मैं अपना देहदान कर पाऊँ।
मौत के बाद की ख्वाहिश अधूरी ना रह पाए।
अगली पीढ़ी से इतनी उम्मीदे क्यों न जताऊं।

१६२

जरूर है मौत का गम जरूर है।
पर मौत से भी ज्यादा चुभता है।
उसके साथ एक पेड़ का जलना।
देहदान से वो चुभन तो मिटती है।

१६३

रंग लाएगी तुम्हारी यादें तुम्हारे दान से।
रंग लाएगा तुम्हारा दान भी तन–मन से।
अंगदान या देहदान या आँखों का दान।
संकल्प करो आज ही मन के भीतर से।

१६४

इच्छा थी बहुत, पर कुछ भी दे न सका।
खुदको पर्याप्त न था, इसलिए दे न सका।
अब भी संकल्प कर देहांगदान का।
फिर लोग कहेंगे, सब कुछ दे सका।

१६५

हमेशा अपने अंगोंकी करु खिदमत ।
रखू उन्हें वैसा जैसा दे गई कुदरत ।
देहांगदान संकल्प जो किया है मैंने ।
मौत के बाद मिलनी है मुझे जन्नत ।

१६६

गलतियों को खुद जान लो ।
गलतफहमियाँ पहचान लो ।
सच्चे कल्याण का एहसास हो ।
तो देहांगदान संकल्प कर लो ।

१६७

दिल ही तो पागल है ।
किस पे भी मरता है ।
दीमाग जब मरता है ।
अंगदान हो सकता है ।

१६८

दिल पर जोर न किसका है ।
टूट जाता है बेकाबू मरता है ।
सोच–समझकर मरे दीमाग ।
पुण्य अंगदान का मिलता है ।

१६९

कुछ रिश्ते जन्म से ही होते है ।
बनते हैं या बिगड़ भी जाते है ।
मृत्यू के बाद बनते अंगदान से ।
ना बिगड़ते हैं ना खत्म होते हैं ।

१७०

इंसानियत के शत्रु के संग ।
जगह जगह छेड़ी हैं जंग ।
अंगदान का जागर करके ।
नयी उमंग में नये तरंग ।

१७१

अभी तो पायी नयी है इज्जत ।
अभी अभी की नयी है शोहरत ।
अभी तो पल्टे है मौत छू कर ।
हुई अंगदान से नयी मुहब्बत ।

१७२

इक्का दुक्का तिक्का ।
कर सोच मगर पक्का ।
अंगदान है सही विचार ।
उसी संकल्प पे सिक्का ।

१७३

मोहब्बत है नयी नयी।
न मालूम किससे हुई।
अंग दे गया जाते–जाते।
दे के मुझे जिंदगी नयी।

१७४

नफरत का बीज बोते रहोगे।
तो फसल कौन सी पाओगे ?
यदि अंगदानके विचार बोओगे।
प्यार और अपनापन पाओगे।

१७५

बकेट लिस्ट अभी बंद ना करना।
नेत्रदान, त्वचादान भी लिखना।
देहदान या अंगदान भी लिख दो।
जी चाहे अब वो बंद भी करना।

१७६

जब अंगदान का संकल्प किया है।
तो अंगों की हिफाजत करना है।
सब बुरी आदते छोड़ भी देना।
अब अंग किसी की अमानत है।

१७७

दिल ए दिमाग को समझाया है ।
देहांगदान संकल्प जो करना है ।
क्या यह संभव परिवार के बिना ?
परिवार को समझाना ज़रूरी है ।

१७८

कभी अंग बदलना इलाज आखरी है ।
तो अंगदान का संकल्प जरूरी है ।
खुदा ना करें आपपर ऐसी नौबत आए ।
पर जिन पर आए उनको तो बचाना है ।

१७९

जिंदगी छोटी है उसे बड़ी करो ।
जिंदगी के बाद और जिया करो ।
कितना सुकून मिलेगा खुद जानो ।
पहले अंगदान संकल्प तो करो ।

१८०

सब के भीतर अंग वही है ।
पर सबके कुछ ढंग अलग है ।
खून वर्ग रिश्ता जुड़ सकता ।
तो जाति धर्म का भेद नहीं है ।

१८१

दर्द देने वाले बहुत मिलते हैं।
दर्द समझने वाले कितने हैं ?
मुश्किल नहीं अंगदान समझना।
जब दर्द समझनेवाले बहुतेरे हैं।

१८२

क्या मालूम देनेवाले ने क्या किया है।
लेने वाला तो कभी भी आ सकता है।
कोई बात नहीं बूढ़े हो या जवान।
देहांगदान करना तो अभी करना है।

१८३

अच्छा आदमी बनना है।
तो कैसे साबित करना है।
बस देहांगदान संकल्प करो।
बाकी कुछ नहीं करना है।

१८४

जब इस्तेमाल भावनाओं का करोगे।
और दीमाग की कदर ही ना करोगे।
तब गड़बड़ घोटाला होते ही रहेगा।
लोग अंगदान की बात भी ना सुनेंगे।

१८५

जिंदा है तो हम हैं ।
हम हैं तो गम है ।
हम नही तो यह शरीर ।
देने मे क्या गम है ।

१८६

मानवता के पक्ष में ।
जंग छेड़ी है हमने ।
जबसे अंगदान का ।
बीड़ा उठाया मन में ।

१८७

हम रत्तिभर न हटेंगे ।
चाहे जियेंगे या मरेंगे ।
अंगदान की सोच में ।
या अंगदान की जंग में ।

१८८

देहदान, नेत्रदान, अंगदान सब कमाल है ।
दृढ़निश्चय तो सच्ची कमाल की चीज है ।
कमाल की कमाल होगी दोनों मिल गए तो ।
उनकी भी कमाल जो यह कर दिखाते हैं ।

१८९

मौत का हाथ जिंदगी के हाथों में ही थमाएँ।
असंभव का हाथ भी संभव के हाथ थमाएँ।
अंगदानके कार्यसे और क्या उम्मीद रखेंगे।
कोशिश है अनहोनी को होनी करके दिखाएँ।

१९०

कोई तो होंगे हमारे सारी जिंदगी में।
हम होंगे किसी के जिंदगी के बाद में।
कोई जो बने हमारा अपने हाथ नहीं।
हम होंगे किसीके अपनेही हाथ सही।

१९१

सोच से सोच जगानी है।
प्यार से प्यार बढ़ाना है।
सोच जगी प्यार बढ़ गया।
तो अंगदान होना ही है।

१९२

कराग्रे वसते दानम्।
करमध्ये ज्ञान दर्शनम्।
करमूले दातृत्व भावम्।
अंगदानस्य भाव जागृतम्।

१९३
पल पल ज़रूरत है अंगों की ।
हर पल तलाश है दाता की ।
कैसे संभव प्रबोधन बिना ।
सोच बदलनी है लोगों की ।

१९४
जहाँ जहाँ जाते है
वहां यही हाल है ।
जरूरतमंद रोते है ।
दाता नहीं मिलते हैं ।

१९५
कार्यकाल लंबा है ।
रास्ते भी कठिन है ।
अब अनेक पीढीयों मे ।
कार्यगंगा बहानी है ।

१९६
ये अंगदान की जंग ।
लाएगी नये नये रंग ।
मौत को दे चकमा ।
ये सपना न हो भंग ।

१९७

अंगदान के भावगीत तू गाता चल।
अंगों के दुखियारों को सुनाता चल।
तू जनमन में खुशियों को लुटाता।
आवाहनसे श्रेष्ठदान बढ़ाता चल।

१९८

फर्ज की न करो बात।
ये तो प्यार की है बात।
अंगदान कोई फर्ज नहीं।
इन्सानियत की है बात।

१९९

जिंदगी से जिंदगी जुड़ेंगी।
तो मौत भी शरमा जायेगी।
हर अंगदान के बाद मौत।
शर्म के मारे बौखलाएगी।

२००

अंगदान को बढ़ाते चलो।
प्रेम की गंगा बहाते चलो।
अंगभंग से हो कोई दुखी।
उसको राहत दिलाते चलो।

२०१

किसी का मुस्कुराना ।
देखेगा सारा जमाना ।
मैं ना देखूं तो क्या ।
मेरा अंगदान है होना ।

२०२

जब फैसलै अटल है ।
तो आशाएं बुलंद हैं ।
दाताओं अटल रहो ।
आशाएं आसमां तक है ।

२०३

जीते जी दिल लगाना मोहब्बत है ।
मौत के बाद लगाना इन्सानियत है ।
जिंदगी मोहब्बतका फर्ज निभाएगी ।
इन्सानियत का फर्ज मौत के हाथ है ।

२०४

संकल्प से मौत को इशारा हो गया ।
और इन्सानियत को सहारा हो गया ।
परिवारको समझाओ मौत का इशारा ।
तो इन्सानियत का सहारा समझ गया ।

२०५

करोड़ों दबते जमीन में ।
करोड़ों जलते आग में ।
अंगदान की सोचो यारो ।
लाखों खड़े हैं कतार में ।

२०६

हमारे पीछे हमारा नाम रहे ना रहे ।
पर हमारे बाद देहांगदान होके रहे ।
ऐसा आश्वासन जो मिले परिवार से ।
जीने के लिए इतने अरमान काफी रहे ।

२०७

आकाश में दीप है तारे है ।
घर में उल्हास है, मिठाई है ।
दीमागमे अंगदान हो तो ।
मनमे शांती है, सुकून है ।

२०८

आप क्यों कतराते किसीको बचाने ।
पानी भी तैयार नहीं होता मुर्दे को डुबाने ।
गलतफहमी में मत डुबाओ विचार ।
कैसा दीमाग हमारा, ये 'सीख' न जाने ।

२०९

जिंदगी का सफर कोई जाना नहीं ।
मौत का भी सफर कोई जाने नही ।
अंगदान का सफर जानते है सभी ।
तो क्यूं कहते नहीं नहीं अब नहीं ।

२१०

दिल में अरमान है ।
आँखों में सपने हैं ।
अंगदान के कार्य मे ।
सपने सच करने है ।

२११

मौत की किस्मत खुलती हैं ।
तो उसमें जिंदगी बसती है ।
देखो अंगदान का चमत्कार ।
किसी शरीर की आयु बढती है ।

२१२

अपने रास्ते पर उगती है घास ।
महीनों कोई न आता आसपास ।
जब कोई प्राप्त करता है अंग ।
उसके लिए है अहम और खास ।

२१३
समाज को सिखाना है ।
जमाने को हिलाना है ।
कठिनाई से ड़रना नही ।
अंगदान को बढ़ाना है ।

२१४
वक्त रुकता कहाँ किसके लिए ।
अपना संकल्प भी रुक ना पाये ।
किस्मत में क्या लिखा क्या मालूम ।
पर देहांगदान जरूर होना चाहिए ।

२१५
अंगदान बुढ़ापे की बात नहीं ।
अंगदान मृत्यु की भी बात नहीं ।
अंगदान तो जिंदगी की बात है ।
किसी नौजवान के लिए ही सही ।

२१६
अपना रास्ता खुद ढूंढ़ते रहो ।
पर वक्त के साथ चलते रहो ।
देहांगदान संकल्प करो यारो ।
जिंदगी के साथ चलते रहो ।

२१७

बात बनती है अटल इरादों से ।
बचना समाज के गुनहगारों से ।
इंसानियत से दुश्मनी क्यों करें ।
डँटे रहो अंगदान के संकल्पों से ।

२१८

कौन रोकता है इंसानियत से ।
डरों मत इस खोखले खौफ से ।
अंधविश्वास का पेहरा तोड़ दे ।
फिर न कोई रोकेगा अंगदान से ।

२१९

दुनिया न बदलेगी तेरे लिए ।
आए ना आए मदद के लिए ।
पहले खुद अपनी सोच को बदल ।
समाजमें नया लाने के लिए ।

२२०

समझदार दाता, अच्छा कार्यकर्ता, अच्छा डॉक्टर।
नसीब होता है सिर्फ खुदा की रहमत पर ।
हम ऊपरवाले तीनों से एक बन सकते है ।
जरूरत क्या विश्वास की खुदा की रहमत पर ।

२२१

जनम जनम के चक्कर में कैद करेगी दुनिया ।

मोह माया मोक्षके चक्कर मे फँसाएगी दुनिया ।

अंगदान से इसी जनम में मोक्ष पा सकते हो ।

क्यों उलझते, सवाल मे क्या कहेगी दुनिया ?

२२२

आशाएँ किसी आँखों में है ।

उम्मीद किसी धड़कन में है ।

क्यों न बने अंगदान के राही ।

चलो जीवनदाता ही बनते हैं ।

२२३

नज़रों को मिलाएँ नज़रों से ।

अंगों को मिलाले अंगों से ।

ये मुहब्बत वाली बात नहीं ।

ऐसा भी होता है अंगदान से ।

२२४

अर्थदान या अन्नदान या वस्त्रदान कर ।

चार दिनों में भूलेंगे सब अमीर कह कर ।

नेत्रदान या त्वचादान या अंगदान कर ।

यदि नाम न जाने याद रखेंगे दाता कह कर !

२२५

जीवन नया मिलेगा जान जाते–जाते ।
अंगदाता जी जाएँगे मौत पाते पाते ।
जीवन तो अनेकों का आबाद करेंगे वो ।
चित्रगुप्त थक जाए हिसाब करते करते ।

२२६

खड़ा करो अपने दिल की अदालतमें ।
अंगदान को आरोपी के कटहरे में ।
आरोपी का समर्थन कमजोर पड़े तो ।
मैं तैयार बैठा हूँ वकील के लिबास में ।

२२७

क्या जलाया है तुमने ।
कोई अपना ना जाने ।
विवेक बुद्धी की बू है ।
देह जलते देखा मैंने ।

२२८

नहीं जा सकता मैं शमशान ।
जलता हुआ डॉक्टरी ज्ञान ।
ऑक्सीजन के पुश्तैनी यंत्र ।
जलता भविष्य का सम्मान ।

२२९

मौत तो जिद करेगी ही जाने की ।
क्या हम जिद करेंगे कुछ रखने की ।
इस खींचातानी में जो कुछ बचेगा ।
वहीं तो जीत होंगी मौतपर अंगदान की ।

२३०

कोई बिछड़ गया कोई गुजर गया ।
नहीं फर्क किसे कोई आया गया ।
दुनिया का दस्तूर, पर अंगदानका ?
आठों की जान को बक्श दिया ।

२३१

जानते हैं लाए थे थोड़ी सी अकल ।
उससे कैसे सँवारे जिंदगी की शकल ।
खुद अपनी भी सोच स्थापित करो ।
अंगदान समझेगी वही सही अकल ।

२३२

अंगदान की शिकायतें बहुत है ।
और हिकायतें भी तो बहुत है ।
चलो एक बार रूबरू हो जाए ।
देखें क्या सच है क्या गलत है ।

२३३

विश्वास न करो कही सुनी बातों से ।
एक बार सामना तो करो सच्चाई से ।
बैठेंगे आमने–सामने बोलेंगे खुलकर ।
उसके बाद मुँह न मोड़ो अंगदान से ।

२३४

कहो दहना न दफना करो ।
अंग देने की जिद तो करो ।
एक बार समझा तो दो उन्हें ।
और बच्चोंपर विश्वास करो ।

२३५

मैने जिंदगी मे ख्वाब सा देखा है ।
मेरे बाद अंगदान होते हुए देखा है ।
मुझे मेरी ही नजरों से मत गिराओ ।
मृत्यू के बाद भी तो चैन से जीना है ।

२३६

बाद एक के नई जिंदगी ।
किसे पता है कैसी जिंदगी ।
अंगदान की बात अलग है ।
मौत टले और बहे जिंदगी ।

२३७

उसकी मौत का मातम कैसे बनाएँ।
जिसकी वजह कोई मौत टल जाए।
अंगदान का ही शुक्रिया अदा करो।
जो दे चुका नयी जिंदगी की दुआएँ।

२३८

जो जिंदगी है घटने वाली।
तो बात करो पटने वाली।
जोड़े किसे थोड़ी जिंदगी।
अंगदान ही है पटने वाली।

२३९

हमारे बाद बहारें होंगी, सितारे होंगे।
गम भी होंगे पर बहुत कम होंगे।
इतना ही तो बता दो ना यार कि,।
अंगदान के बढ़ते हुए आंकड़े होंगे।

२४०

जीते जाओ जिंदगी सभी की तरह।
पर मौत ना आए सभी की तरह।
मौत किसी जिंदगी से जुड़ जाए।
यही सबकी चाहत बने मेरी तरह।

२४१

कुछ ख्वाइशें है, कुछ जरूरते है ।
कुछ सपने हैं, कुछ इरादे भी हैं ।
ख्वाहिशें जरूरतों से मिल जाए ।
यही अंगदान के सपने हैं, इरादे हैं ।

२४२

क्या मरता है सुगंध फूल के मृत्यू से ?
दानत कैसी खत्म दाता की मृत्यु से ।
अंगदान अपनालो मृत्यु रोक न सके ।
फूल नहीं रहे पर गंध न हटे हवाओं से !

२४३

पूर्ण रूप से नहीं रहूंगा ।
अंग रूप से यहीं रहूँगा ।
यही रहेगी तमन्ना सदा ।
मैं न रहूँगा फिर भी रहुँगा ।

२४४

आँखों की नमी को पोछे तो धुंधलापन मिट सके।
अंधे को कोई सही राह बताएँ तो वह चल सके।
कार्यकर्ताओं रोशनी दिखाओ अंगदान की राहों पर।
बुद्धि का अंधापन मिटे तो कोई अंगदान कर सके।

२४५

भटक ना जाए कोई राह से ।
बहक ना जाए कोई कार्य से ।
दृढ़ संकल्प हो, कार्यज्ञान हो ।
मुकर ना जाए कोई अंगदान से ।

२४६

जीवन सरिता जीवनधारा ।
खत्म हुई तो कहाँ किनारा ।
अंगदान कर नेत्रदान कर ।
नयी जिंदगी नया किनारा ।

२४७

हजारों ख्वाहिशें ऐसी जो पूरी हो नहीं सकती ।
नीचे दिल दबा है पर धड़कने बंद ना होती ।
ख्वाइश एक बचने दो जो धड़कन बंद हो जाए ।
भरे कोई रंग आँखों में, किसे हो ज्ञान की प्राप्ति ।

२४८

दान की चाहत है ।
देने को कुछ नही है ।
सोच बदल के देख ।
अंगदान एक पर्याय है ।

२४९

जिंदा है तो जिंदा है ।
मुर्दा हैं तो मुर्दा है ।
मुर्दा जिंदा बनाये वो ।
अंगदान का बंदा है ।

२५०

अंगदान तो दान है ।
पुण्य तो मिलना है ।
फकीर का कहना हो ।
या साधू की बात है ।

२५१

मुमकिन नही मौत के बाद जिंदगी पाए ।
पर मुमकिन है की मौत से जिंदगी पाए ।
समझ अंगदान का संकल्प क्या है ।
मेरी मौत से भी कोई जिंदगी पाए ।

२५२

हर किसी से है जिंदगी और मौत का रिश्ता ।
जिंदगी का हर एक से है दोस्ती का रिश्ता ।
मौत से भी दोस्ती कर के देख जरा ।
अंगदान से बनेगा मौत का जिंदगी से रिश्ता ।

२५३
जिंदगी भर जी लो अपने दिल की धड़कने।
पर किसी के लिए बक्ष दो मौत की धड़कने।
चाहे तो तुम्हारा दिल फिर से धड़क सकता है।
सिर्फ समझनी होगी ज़रूरतमंदोकी धड़कने।

२५४
प्रश्न पूछोगे तभी समाधान मिलेगा।
समाधान होगा तभी मन जागृत होगा।
जागृती से ही संकल्प होगा।
संकल्प के बाद अंगदान भी होगा।

२५५
कोई हो गया श्रेष्ठ महान।
जैसे ही हो गया अंगदान।
वरना हैसियत क्या थी जीते जी।
एक कृती से मिले जीवन सन्मान।

२५६
आसमाँ में रंग है।
दुनिया में ढंग है।
लोगों में हम है।
अंगदान संग है।

२५७

जिंदगी बोली मौत से ।
अभी लौटजा मेरे घर से ।
देखो अंगदाता आया है ।
तुझे आना होगा फिर से ।

२५८

अंगदान हो भी जाता है ।
उसके नखरे कम नही है ।
हम जिद लगा के बैठे हैं ।
हम भी कुछ कम नहीं है ।

२५९

कोई आए या ना आए चलते गए ।
कोई माने या ना माने मनाते गए ।
ये अंगदान यारों मन–बहलाव नहीं ।
कोई सीखे या ना सीखे सिखाते गए ।

२६०

मृत्यु नही टलेगा अंगदान करने से ।
अंधेरा नही भागेगा दिया जलाने से ।
पर कम से कम राह तो दिखेगी ।
मृत्यु कुछ दूरीपर ठहरेगी अंगदान से ।

२६१

जिंदगी लंबी होती है अंगदान से ।

पर जिंदगी बडी होगी मकसद से ।

अंगदान प्रबोधनको मकसद बनाओ ।

जिंदगी विकसित करो प्रबोधन से ।

२६२

अंगदान वफाई है मानवता से ।

क्यो मुँह मोड़ बैठै हो वफाई से ।

प्यार तो वफाई से ही ही फैलता है ।

सिर्फ नफरत फैलती है बेवफाई से ।

२६३

भटकना है जिंदगीके बाद अंधेरे में ।

अंगदान का दिया जलाके जाओ राह में ।

दिया पीछे छोड़ जाओगे अंधेरे मे ।

उजाला फैलेगा पीछेवाले के सामने ।

२६४

कैसा मंजर है आजके दौर में ।

सबकी रुची है सिर्फ लेने में ।

अंगदान के आलंबन का यही हाल है ।

कितने आगे आते है देने मे ?

२६५

कुछ अफसाने कुछ दास्ताएँ सुनाता जा।
अंगदान के किस्से कुछ गाने गाता जा।
कोई गुनगुने धुन, कोई कहे लब्ज।
अंगदान को मनमन मे सजाते जा।

२६६

जिंदगी में अपने तो मिलते है।
पर क्या अपनापन मिलता है ?
पर अंगदान तो करके देखो।
मिले नहीं अपनापन जरूर है !

२६७

वे आयेंगे या नहीं बुलाकर तो देख लो।
जीत होगी या नही कोशिश करके तो देख लो।
सिर्फ खयालों में ही क्यूँ उलझते हो।
दान होगा या नही संकल्प करके तो देख लो।

२६८

ठान ली करना है तो हो जाएगा।
जमाने को घबरानेसे क्या हो जाएगा ?
अंगदान अच्छी चीज है तो, कहो है।
संकल्प ना करने से क्या हो जाएगा ?

२६९

अंगदान को सेव करो ।
आशंकाएँ डिलीट करो ।
हमसे एंटीवायरस फ्री ।
संकल्प फॉरवर्ड करो ।

२७०

आयेगी मौत क्या होगा खाक ।
माटी बने या बने राख ।
पर अंगदान यदि कर पाएगा ।
तू दुवाएँ ले जा लाख लाख ।

२७१

पुकारा कभी फुर्सत से ?
मानवता भरे दिल से ।
मौत भी काम आ सके ।
किसी की देहांगदान से ।

२७२

बसेगा कोई जाके अंधेरे मे ।
रंग भरे किसीकी आँखो मे ।
जाते जाते जिंदगी अंधेरे में ।
उजाला करे किसी जिंदगी में ।

२७३

देखो हर बरस का अंदाज अलग है।
मौसम का मिजाज बदल रहा है।
अडियल बैठे हो लेके झूठा मिजाज।
अंगदान से मौत भी जिंदगी छूती है।

२७४

किसी मुस्कान पर जिंदगी लुटाते हो।
किसीकी अदापर होश खो बैठते हो।
कभी किसी पर मौत भी लुटा देना।
अंगदान तो तुम जानते ही हो !

२७५

न तेरा नाम होगा।
न कोई दाम होगा।
पर मौत के बाद।
तू जन्नत में होगा।

२७६

जाना तो मृत्यु के बाद ही।
अमरोंकी प्रेम सभा में भी।
अंगदान से दोनों जगह होगा।
ऊपर भी और नीचे भी।

२७७

फूंकसे बुझता है दिया अगरबत्ती नही ।
अंगदान से हारती है मौत जिंदगी नहीं ।
देहांगदान संकल्प करे तो सुकून मिले ।
वो क्या जाने जिसने संकल्प किया ही नहीं !

२७८

अंगदान के भावगीत तू गाता चल ।
अंगों के दुखियारों को सुनाता चल ।
तू जन मन में खुशियों को लुटाता ।
आवाहन से श्रेष्ठदान बढ़ाता चल ।

२७९

अकेले आए थे अकेले जाएँ गे ।
देह ले आए थे वह भी रख जाएँ गे ।
अगर हो भी सका नसीब किसी का ।
किसी जिंदगी की उम्मीद रख जाएँगे ।

२८०

अंगदान के प्रभाव में रहो ।
नेत्रदान के विकल्प में रहो ।
छुटकारा होगा मौत के पकड़ से ।
श्रेष्ठ दान के जकड़ में रहो ।

२८१

विनम्र जिंदगी खड़ी थी ।
मौत हठ किए बैठी थी ।
फिर भी मौत वापस गई ।
जिंदगी अंगदान पे अड़ी थी ।

२८२

जिंदगी और मौत का झगड़ा था ।
बहुत धमासान और बिगड़ा था ।
कुछ अंग तो बच गए बीच में ।
अंगदान का मामला तगड़ा था ।

२८३

आईने पर गिरते ही मार्ग बदलती सूरज की किरनें ।
अंगदान पर गिरते ही मार्ग बदलती मौत की किरनें ।
अंगदान से आज की मौत तो टल जाएगी ना यार ।
देखेंगे तब, जब फिर कभी आएगी मौत की किरने ।

२८४

देर मत कर मेरे यार अंगदान कर ।
मालूम नहीं तो सब मालूम कर ।
क्या पूछता पगले किधर जाऊँ ।
कभी तो एक शाम मेरे नाम कर !

२८५

लोक कल्याण का विचार कभी न भूलें ।
स्वार्थ साधकों के जंगल में राह ना भूले ।
अंगदान का विचार मानव कल्याण का है ।
तो अंगदान का संकल्प कभी ना भूले ।

२८६

रात बिना तो सुबह नहीं है ।
तार बिना झंकार नहीं है ।
अंगदान के बिना साथियों ।
जीवन का उद्धार नहीं है ।

२८७

अंगदान को समझो यारो ।
जीवन एक उपहार है यारों ।
उपहार है देना निश्चय कर लो ।
झंकृत कोई जीवन हो यारों ।

२८८

कदरदानों तुम्हें हुआ क्या है ?
इसी मामले में अकड़ क्यों है ?
ना के बराबर अंगदान क्यों ?
अंगदान तो अनगिनत पुण्य है ।

२८९

देख देख अरे ये हुआ क्या है ।
मरा दिमाग दिल धड़कता है ।
अरे अरे यही तो वो घड़ी है ।
जहाँ अब अंगदान मुमकिन है ।

२९०

बड़ी अजीब है सवालों की दीवारें ।
लाँघना है तो किसी को पूछ मेरे प्यारे ।
किसी अनुभवी ज्ञानी से पूछ नहीं तो ।
अज्ञानी और भी ऊँची उठाएगा दिवारे ।

२९१

यह दान की बातें हैं ।
जो कुछ न समझते हैं ।
बेपारी ही तो ठहरे वो ।
लेन नही तो देना क्या है ।

२९२

मुस्कुराने से गम छुपते हैं ।
दान से तो पाप धुलते हैं ।
अंगदान की बात अलग है ।
उससे जिंदगियाँ खुलती है ।

२९३

देह मुक्त हो जाओगे।
मार्ग लुप्त हो जाएँगे।
एक मार्ग देहांगदान का।
आत्ममुक्त हो जाओगे।

२९४

खुशहाली से दोस्ती है।
खुशमिजाज तबीयत है।
उसमें अंगदान की खुशी।
तो शोहरत ही शोहरत है !

२९५

खेल है ये अफलातून।
पन्ने कितने ना मालूम।
खेल छोड़ते जोड़ किसे।
अपना पन्ना बेमालूम !

२९६

क्या अंदाज देखा अंगदान का।
संकल्प दृढ़ था करने वाले का।
मौत को भी देखा रुका रुका सा।
पर ध्यान किधर था जमाने का।

२९७

कुछ ना मिला विरासत में ।
कुछ ना मिला मोहब्बत में ।
अनजान के प्यार के लिए ।
अंग छोड़ गया विरासत में ।

२९८

मृत्यु की राह में ।
दो रास्ते सामने ।
अंगदान उजाले में ।
अनजान अंधेरे में ।

२९९

आखरी पन्ने पर क्या है ।
क्या कोई जान सका है ।
देहांगदान जो लिख देगा ।
वह तो सब जान चुका है ।

३००

डरने से जिंदगी नही बढ़ती ।
गिडगिडानेसे मौत नाही टलती ।
सर उठा के करो अंगदान,
उससे मौत भी आगे बढ़ती ।

"**अंगदान की चार लाइनों**" का सफर आज तक ३०० का आंकड़ा पार कर चुका है। पिछले एक साल रोज एक ही विषय पर रोज लिखना इसकी अब आदत पड़ गई है पर –

एक ही एक तरह के काव्य पंक्तियां रोज–रोज फढकर आप बोर हो गए होंगे। इसका मतलब यह नहीं कि अभी मेरी रोज की हाजरी बंद हो जाएगी। पर रोज विभिन्न प्रकार के काव्य प्रकारों में अवगुंठित शब्दावली आपके सामने जरूर पेश करता रहूंगा । पर अब चार ही लाईना क्यों ? जैसी जैसी दिमाग में लाइने गूंजती रहेंगी, भले दो हो चार हो या आठ या कुछ और। यह सिलसिला चालू रहेगा। उसमें दोहे होंगे, अभंग होंगे, या कुछ अच्छे और बड़े कवियों की कविता के स्टाइल में मेरे शब्द होंगे, व्यंग्य काव्य रहेंगे, फिल्म के गानों की धुन पर बनाई हुई कविता रहेंगी। ऐसा बहुत कुछ दिमाग में है, कागज पर उतरता है और आपके सामने रखने की इच्छा होती रहती है । आपके सामने रखने से मन को शांति और तुष्टि मिलती है ।

यह सिलसिला चालू रहेगा पर अंगदान की चंद लाईना इस नाम पर रहेगा। चार ही क्यों ? दिमाग में जितनी आएंगी उतनी और जैसे आएंगी वैसे आपके सामने पेश करता रहूंगा ।

"अंगदान की चंद लाईना"

इसलिए मैं कहता हूं –

न चार लाईना, न कता, न रुबाइ
फिर भी सुनाऊं, दिलकी बताई
कुछ लाईना रोज गूंजेगी दिलमे,
देहांगदान की महफिल है सजाई।

– सुनील देशपांडे

इस पुस्तक के बाद भी और कुछ सोचता रहूंगा लिखता रहूंगा और आगे आगे नयी कविता नयी किताबे आपके सामने रखने की कोशिश जारी रहेगी.

१

जिंदगी से खूबसूरत हरकत हो गई।
किसिकी मौत जिंदगी से जुड़ गई।

२

मौत जिंदगी को खाक करती है
पर देहको खाक मत बनने देना,
वो किसी को ज्ञानी बना सकता है।

३

उस मौत ने मुझे नहीं रुला दिया।
जलती हुई चिता देख फूट–फूट के रोया।

४

अंगदान हुआ जिंदगी भी बढी एहसान का बोझ नहीं।
जिंदगी का कर्ज चढ गया।

५

कथनी, करनी मे दम होता हैं।
जब कोई दिलसे चाहता है।
अंगदानको दिलसे चाहो तो।
सबकुछ मुमकिन होता है।

६

वही समझते हैं अंगदान की बातें,

जो जिंदगी से बेहद प्यार करते हैं।

७

कोई पंछियों के लिए बंदूक रखता है, तो कोई पानी।

कोई अंगदान की बातें अनसुना करते हैं, और कोई संकल्प।

८

बहुत सारे नक्शे दिखाएं थे लोगों ने स्वर्ग जाने के।

हमने पकड़ लिया रास्ता अंगदान का, सब को चकमा दे के।

९

जिंदगी गुजर गई खुद के लिए।

मौत को रहने दो दूसरों के लिए।

१०

अंगदान से क्यों मुंह मोड़ लेते हो ?

इंसानियतपे क्यों तोहमत लगाते हो ?

११

सिर्फ अपने संकल्पसे कैसे बनेगी बात

अपनोंको अक्सर याद दिलाते रहना होगा।

१२

कल था जिंदा, कल मौतका बंधा।

कौन जाने आज, कल क्या होगा।

यही घड़ी दुरुस्त, संकल्प करना होगा।

१३

खून के रिश्ते,

टूट सकते हैं।

पर अंगदानके ?

कभी नहीं।

१४

देहांगदान संकल्प के लिए वक्त तो लगता है।

गाड़ी पहले गियर में स्पीड तो नहीं पकड़ती है।

पर अगली पीढ़ियों से वह परंपरा बन सकती है।

१५

संकल्प से भागेंगे तो जिंदगी से भागेंगे

पर मौत से कैसे भागेंगे ?

मौत के बाद जिंदगी से भागना

क्या ये जायज है ?

१६

मौत के खट्टेमे घोलो अमृत का मीठा पन।
उसमें फिर मिलाया जाए ज्ञानका सुगंध
हो जाएगा स्वाद जो तैयार वो संकल्प है।

१७

हजारों संकल्प निकले, हर संकल्प पे जान हाजिर थी।
सच देखा तो उसमें से जो निकले बहुत कम निकले।

१८

पागलोंसे बात करने का क्या मतलब
दुनिया में सियाने बहुत है।
देहांगदान उन्हींको समझाओ जो समझते बहुत है।

१९

नेत्रदानम्, त्वचादानम्
पुण्यम् खलु, पुण्यम् खलु
पुण्यसंचयात् परलोक समृद्धी ;
देहदानम् खलु, अंगदानम् खलु

२०

किरन की दोस्ती क्यूं नही होती अंधेरों से।
जब अंगदान की हो सकती है मौत से।

२१

उठा लो कफन, मेडिकल कॉलेज में।
अब बिना बोले प्राध्यापक मैं हूं।

२२

जिगर में आग हो तो मत जलाओ मौत के बाद।
जिगर में शांति हो तो मत दफनाओ मौत के बाद।
बेटो, पोतो को अच्छी सीख चाहिए,
तो देदो उन्हीं के कॉलेज के हाथ।

२३

मौत तेरे हाथमें तो सिर्फ जिंदगी है।
हमारे हाथ क्या क्या है वह जानना है ?
तो जिंदा हो जा।

२४

तेरे हाथ जिंदगी नही।
मौत भी तेरे हात नही।
तेरे हाथ है, मौतके बाद
दुसरे को जिंदगी देना।

२५

बार–बार सताती है मेरे बाद एक चिंता।
देहदान होने दे, मत रचने देना चिता।

२६

जिंदगी खेल है प्यारो
मौत तो अंत है यारो
अकड किस बात की यारो
किसे दो जिंदगी यारो ।

२७

मत छीन लो किसी का अंग पाने का हक।
और मत छीन लो मेरे अंगदान का हक।

२८

खो मत जाना जमानेके शोरमें ये भूलभुलैया है।
अंगदान करनेवाले अपना मकाम खुद बनाते है।

२९

क्या मिलेगा अंगदानसे दूर रहके
बदीसे तो रौनक नहीं मिलती ।

३०

लाशको जलानेसे पहले
जलेहुए जिंदेको बचाओ
त्वचादान करो

३१

कितना प्रयास करते हैं की
अपने गुलशन में नया फूल खिले।
प्रयास करो की नेत्रदानसे किस
अंधेरी आंख में नई आंख खिले।

३२

अंगदानकी जिंदादिली दिखाओ तो
मुर्दे भी जी उठते है ।

३३

जिंदगीभर देते रहोगे
हर पूजा पर कुछ न कुछ चढाते रहोगे
मौतपे क्यूँ खपा होंगे ?
मौतकी पूजापे देह या अंगोंको क्यूँ न चढाओगे ?

३४

बातें तो मौत की करते है
पर जिंदगीयां बचाते है

३५

काटो मे मुस्कुराये वो गुलाब होता है
मौत पे मुस्कुराये वह अंगदान होता है

३६

चाहे अग्नि को दें ; या भूमि को दें,
हम मृत्यु बाद देह दान करते ही है।
उससे पहले अंध व्यक्तिको दें आंखे
यह दुनिया हम फिर से देख सकते हैं।

३७

स्वर्ग मे अपना रिझर्वेशन कर दिया
अंगदान का दृढ संकल्प कर लिया
रिझर्वेशन है पर बिठाएगा कौन गाडी मे ?
बच्चों पर आशा है समझ उनकी दिमाग मे !

३८

मुंहमे जबान है सीनेमे दिल है
दीमागमे मगज ऐसे जो इन्सान
जबान से बोलो दिल से सोचो
दीमाग मे रख्खो करेंगे देहांगदान

३९

बहुत चाहा हमने इन्सानियत के काम आना है
पर मस्तिष्क मे सगे संबंधियोंकी जंजिरे पडी है
बहुत चाहा अंगदान संकल्प करना है
मस्तिष्क की जंजीरोंने मन को जखड रखा है

४०
मैने सारी उम्रभर जीने की सजा कबूल कर ली है
पर मरने के बाद अंगदान की ख्वाईश पुरी कर
सारी जिंदगी भर हमने लब भी ना खोले
पर दिल के अंदर की चीख जरूर सुन ले
हमे कुछ भी न गीला है न शिकायत है
मांगना कुछ भी नही सिर्फ देना ही तो है
जिंदगी भर ना कुछ मांगा बाद भी नही
कुछ अंग मांगने वालों की तमन्ना तो पुरी कर

४१
ना मानू मै तुझे तेरी पूजा भी ना करूं
तुझे मानने वालों के लिए तो कुछ करूं
किसी इबादत वाले के लिये मिले मेरे अंग
भले दीमाग मार दे मेरा अंगों से ना मरूं

४२
परेशानिया दूर करती है मौत
अंगदान से दूर होती है मौत

४३
दगा नही देना जी दगा नही देना
संकल्प अंगदानका भूल नही जाना

४४
दुर्विचार दूर होते है सद्विचारोंसे
मौत दूर होती है अंगदानोंसे

४५
जमानेकी बातो से धोका न खाना
अपने ही वादे पे मुकर ना जाना
अंगदानका वादा जिंदगी का है
मौत के बाद कही भूल ना जाना

४६
हर पल मे जंग है
जंगके आगे मौत है
धैर्य से जंग जीतो
अंगदान से मौत जीतो

४७
ये मत कहना–
कैसे करूं अंगदान की बात
हाय! ना बाबा ना बाबा
पीछे जमाना खांसता

४८
किसी जमाने मे तलवार थी आज मशीनगन है
किसी जमाने मे अपनापन था आज अंगदान है

४९
आजकल बहुत मिलने लगे संकल्प करनेवाले
निभानेवाले बहुत मुश्किल से मिले हैं

५०

जिंदगी के बाद जीने की ख्वाहिश रखता हूं।
अंगदान करने की मैं ख्वाहिश रखता हूं।
ख्वाहिश तो ख्वाहिश है पूरी कैसे होगी ?
मस्तिष्क स्तंभ मृत्यू की आशा करता हूं।
दिल का क्या भरोसा, धड़कना कभी बंद हो ?
नेत्रदान और त्वचा दान की ख्वाहिश रखता हूं।
खो जाऊं अंधकारमें, पर ज्ञान–ज्योति जलाके जाऊं,
मृत्यु के बाद देहदान की ख्वाहिश रखता हूं।
मौत के बाद ख्वाहिश अधूरी ना रह जाए,
अगली पीढ़ीसे इतनी उम्मीद तो रखता हूं।

५१

मानवता की सोच आजमा कर देख
कितना सुकून मिलेगा
अंगदान की सोच करके तो देख
कितना सुकून मिलेगा

अंगदान संकल्प करके तो देख
कितना सुकून मिलेगा
सबको संकल्प सुनाकर तो देख
कितना सुकून मिलेगा

मरने के बाद संकल्प पूरा करके तो देख,
कितना सुकून मिलेगा
आंखें दान कर और उसी आंखों से देख
कितना सुकून मिलेगा
अंगदान होगा तो स्वर्ग से भी देख
कितना सुकून मिलेगा

अंग पानेवालोंके सभी सगे संबंधी वही दोहराएंगे
हम अंगदान करेंगे हमें भी सुकून मिलेगा

५२

नेत्रदानम्, त्वचादान पुण्यम् खलु,
देहदानम् खलु, अंगदानम् खलु

लोग कहते हैं अंगदान होता नहीं
ज्ञान उसका उन्हें तुम बताते नहीं

लोग केहते है देहदान मुमकिन नही
दधिची की कथा तुम बताते नहीं

लोग कहते हैं सद्गति मिलेगी नहीं
शिबी राजा की बात तुम बताते नहीं

लोग कहते हैं ऐसे हुआ है कभी
गणेशजी को तुम याद करते नहीं

लोग पूछेंगे क्या लाभ मिलता उन्हें
कर्णजी की कथा तुम बताते नहीं
लोग कहते अपना रिवाजही नहीं
भारती संस्कृति तुम सिखाते नहीं

जब तलक आप लोगों से जुड़ते नहीं
ये प्रबोधन की धारा बहेगी नहीं

५३
देवा हो देवा गणपति देवा
अंगदानको मिले बढावा
ये आशिष देना, स्वामी ये आशिष देना
और तुम्हारे भक्तजनों को सदबुद्धी देना
स्वामी सदबुद्धी देना

अद्भुत किमया अंगदानकी महिमा अपरंपार
प्रभु महिमा अपरंपार
बिन मांगे पूरा होने दो अंगदान साकार
प्रभु अंगदान साकार

जरूरतमंदोको मिल जाये जीवनका आधार
प्रभु जीवनका आधार
मानवता और बंधुभावका स्वप्न बने साकार
देवा स्वप्न बने साकार

अंगदानकी कार्य के लिये तुम शक्ती देना,
स्वामि तुम शक्ती देना
भक्तों की इस भीड़ में उनके मन जागृत करना
प्रभु मन जागृत करना

रूप तुम्हारा अंगदानका देता है संदेश
प्रभु देता है संदेश
अंगदानकें संदेशोंसे गूंज उठे ये देश
प्रभु गूंज उठे ये देश
जय गणेश जय गणेश

५४
मस्तिष्कस्तंभ मृत्यु क्या है
मैं मृत हूं और दिल जिंदा है
वेंटीलेटर प्यार का है जब
तब तक ये दिल जिंदा है
दिल पे किसी का जोर नहीं
जिंदा दिमाग हो या मुर्दा है
मैं दिलवाला कहता हूं, पर
डॉक्टर भी यह कहता है

किसको दिल देदो या अंग

जब तक ये दिल जिंदा है

अंगदान जो कर सकते है

वो मर कर भी तो जीते हैं

आँखें और चमड़ी दे देना

जब दिल ही मर जाता है

उसे ही कहते जिंदादिल

जो देना ही तो जानत है

कुछ ना कुछ तो देते जाओ

जब जिंदादिल कहलाना है

५५

अंगदान भजन

(धुन : रघुपति राघव राजा राम)

करना है संकल्प महान

अंगदान या स्वदेहदान

त्वचादान और स्वनेत्रदान

अंग, ऊती और स्वदेहदान

करना है संकल्प महान

अंगदान या स्वदेहदान

रक्तदान है पुण्य महान
अंगदान भी पुण्य महान
जीतेजी हो खूनका दान
जाते जाते हो अंगदान

करना है संकल्प महान
अंगदान या स्वदेहदान

५६
(अंगदान कार्यकर्ता स्फूर्ती गीत – १)

अंगदानकी जंग छेडके कामयाब होंगे
अंगदानकी जंग लडेंगे कामयाब होंगे

नये दौरकी नयी लडाई मानवताकी है
मृत्यूके पश्चात औरभी जीवन पाना है
बडी अनोखी जंग है ये ना किसे मारना है
नही किसीको मारना यहाँ जान बचानी है

अंगदानकी जंग छेडके कामयाब होंगे
अंगदानकी जंग लडेंगे कामयाब होंगे

अंगदान तुम कहो इसे या अवयवदान कहो
ऑर्गन डोनेशनभी कहदो बात एकही है
अलग अलग हो भाषा अपनी कार्य एकही है
भूमी अलग पर मानवताकी एक भावना है

अंगदानकी जंग छेडके कामयाब होंगे
अंगदानकी जंग लडेंगे कामयाब होंगे

५७

(अंगदान कार्यकर्ता स्फूर्ती गीत – २)

समाज मनको है समझाना, अंगदान के बोल बोलना
क्या है देना कब है देना, पुण्य कार्य है सभी निभाना
दधीचि ऋषी है पेहेला दाता, पहिला वंदन उन्हे है करना
उन्हे है करना

प्रत्यारोपण खयाल पहिला गणेशजी ने मन मे जगाया
क्या है सच्चा क्या है झूठा इस उलझन मे आज न आना
आज न आना

हरिश्चंद्र था, शिबिराजा था, बडा ही दानी कर्णराज था
कितने ज्ञानी कितने दानी, सभी सभी को अभी है स्मरना
अभी है स्मरना

अंगदान है देहदान है नेत्रदान है त्वचादान है
ये सब बाते है समझाना समाज मन को जागृत करना
जागृत करना

पहले शास्त्र क्रिया समझेंगे, शस्त्रक्रिया भी फिर है समझना
खुद समझेंगे समझाएंगे समाजमन को जागृत करना जागृत करना
जागृत करना

५८

लेंगे कसम हम, कसम हम,
अंगदान की हां।
मृत्यू के भी बाद जिएंगे
अंगदान से हां।

नेत्रदान करलो,
त्वचादान करलो,
देहदान से भी,
ज्ञानदान करलो।
जान बचाए, ज्ञान बढ़ाए,
अंगदान से हां।
मृत्यु के भी बाद जिएंगे
अंगदान से हां।

ये कसम है कैसी ?
अंगदान क्या है ?
जंग मौत से है,
कोई जान बचानी है।
धर्म न पूछो, जाति न पूछो,
लेन देन की हां।
वर्ग खूनका, फर्क सिर्फ है,
अंगदान मे हां।

***